3 दोहे

➤ बिहारी

बिहारी के दोहों का सार (प्रतिपाद्य)

पहले दोहे में बिहारी लाल श्रीकृष्ण के तन पर ओढ़े हुए पीत वस्त्र की तुलना नीलमणि शैल पर पड़ने वाली सूर्य की आभा से कर रहे हैं।

दूसरे दोहे में गर्मी की भीषणता का वर्णन करते हुए वे कहते हैं कि गर्मी की अधिकता के कारण शत्रु भी मित्र बन गए हैं।

तीसरे दोहे में गोपियों द्वारा कृष्ण की मुरली छिपा देने की चर्चा की गई है ताकि इस बहाने वे श्रीकृष्ण से बातचीत कर सकें।

चौथे दोहे के माध्यम से कवि नायक-नायिका के संकेतों द्वारा बातचीत की चर्चा कर रहे हैं। साथ ही साथ उन्होंने दोनों के हाव-भाव का भी जीवंत चित्रण किया है।

पाँचवें दोहे में जेठ माह की भीषण गर्मी का चित्रण किया गया है। यह गर्मी इतनी प्रचंड है कि छाया भी छाया की इच्छा करने लगती है।

छठे दोहे में कवि हृदय की बात हृदय से ही कर लेने का सुझाव देते हैं। वे कहते हैं कि कागज पर लिखने तथा दूती द्वारा संदेश भेजने में लज्जा आती है। हृदय ही हृदय की आवाज सुन सकता है।

सातवें दोहे में कवि ने अपने पिता श्री केशवराय और भगवान कृष्ण को एक साथ अपना संरक्षक मानते हुए उनका आशीर्वाद चाहा है।

आठवें दोहे में कवि प्रभु-प्राप्ति के लिए बाहरी दिखावे छोड़कर सच्ची भक्ति अपनाने पर बल देते हैं।

इस प्रकार बिहारी जी के दोहे जीवन के प्रत्येक प्रसंग को सूक्ष्मता से कह जाते हैं। ये पाठक के हृदय पर अमिट छाप छोड़ते हैं।

दोहों की व्याख्या

1. ***सोहत ओढ़ैं पीतु पटु स्याम सलौनैं गात।***
मनौ नीलमनि-सैल पर आतपु पर्‌यौ प्रभात॥

शब्दार्थ : सोहत = शोभायमान होते हैं, सुंदर लगते हैं, **ओढ़ै** = ओढ़े हुए (पहने हुए), **पीतु पटु** = पीले वस्त्र, **स्याम** = साँवले (श्रीकृष्ण), **सलौनैं** = लावण्ययुक्त, सुंदर, **गात** = शरीर, **मनौ** = मानो, **नीलमनि** = नीलमणि, **सैल** = शैल, पर्वत, **आतपु** = धूप, **प्रभात** = प्रात:काल, सवेरा।

व्याख्या : बिहारी लाल जी कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने अपने साँवले शरीर पर पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं और वे इन वस्त्रों के कारण अत्यधिक सुंदर लग रहे हैं। उनके रूप-माधुर्य पर दृष्टिपात करके ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानो नीलमणि पर्वत पर प्रात:कालीन सूर्य की धूप फैल गई है।

काव्य-सौंदर्य :

भाव पक्ष :

1. श्रीकृष्ण के रूप-माधुर्य का वर्णन किया गया है।
2. स्यामल शरीर पर पीत वस्त्रों की शोभा का अनुपम वर्णन किया गया है।

कला पक्ष :

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है तथा भाषा भावाभिव्यक्ति में सक्षम है।
2. 'पीत पटु' में अनुप्रास अलंकार है।
3. 'मनौ' शब्द के प्रयोग के कारण यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार भी है।
4. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।

2. ***कहलाने एकत बसत अहि मयूर, मृग बाघ।***
जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ॥

शब्दार्थ : एकत = एक होकर, **बसत** = रह रहे हैं, **अहि** = साँप, **मयूर** = मोर, **मृग** = हिरण, **बाघ** = शेर, **जगतु** = संसार, **तपोबन** = तपोवन, **कियौ** = करना, **दीरघ** = दीर्घ, **दाघ** = गर्मी (दाह)।

व्याख्या : कवि कहते हैं भीषण गर्मी पड़ रही है। इस गर्मी के कारण आपस में शत्रुता भाव रखने वाले जीव भी एक स्थान पर रहने लगे हैं अर्थात उन्होंने भी वैर-वैमनस्य की भावना भुला दी है। उदाहरणतया साँप और मोर, हिरण और शेर आपस में शत्रुता भुलाकर यहाँ साथ-साथ रह रहे हैं। इस प्रकार सारा संसार तपोवन की भाँति हो गया है।

काव्य-सौंदर्य :

भाव पक्ष :

1. ग्रीष्म ऋतु की भीषणता का सुंदर वर्णन किया गया है।
2. ग्रीष्म ऋतु का जीव-जंतुओं पर पड़ने वाला अनुपम प्रभाव दर्शाया गया है।

कला पक्ष :

1. ब्रज भाषा का सहज एवं सरल प्रयोग किया गया है।
2. 'मयूर मृग', 'दीरघ-दाघ' में अनुप्रास अलंकार है।
3. इसमें दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

3. ***बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।***
सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ॥

शब्दार्थ : बतरस = बात करने का रस (आनंद) (बतरस = बत + रस), **लाल** = कृष्ण, **मुरली** = बाँसुरी, **धरी** = रखना, **लुकाइ** = छिपा दी, **सौंह** = सौगंध, **भौंहनु** = भौहों से, **देन कहैं** = देने के लिए कहना, **नटि जाइ** = मना कर देती हैं।

व्याख्या : बिहारी जी कहते हैं कि राधा ने श्रीकृष्ण से बात करने के लालच में उनकी मुरली छिपा कर रख दी है। जब श्रीकृष्ण राधा से अपनी बाँसुरी वापस माँगते हैं, तब वे सौगंध खाकर कहती हैं कि बाँसुरी उनके पास नहीं हैं। जब श्रीकृष्ण उनकी बात पर विश्वास कर लेते हैं, तब राधा भौंहों के माध्यम से हँस पड़ती हैं। उनकी यह हँसी कृष्ण को बता देती है कि बाँसुरी उनके ही पास है। इस प्रकार राधा श्रीकृष्ण से बातचीत का अवसर निकाल ही लेती हैं अर्थात राधा श्रीकृष्ण से बातचीत का अवसर पाने के लिए बाँसुरी रूपी व्यवधान को हटा देती हैं।

काव्य-सौंदर्य :

भाव पक्ष :

1. कृष्ण के प्रति राधा की प्रीति परिलक्षित हो रही है।
2. राधा का मुरली के प्रति ईर्ष्या भाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

कला पक्ष :

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है और यह भावाभिव्यक्ति में सक्षम है।
2. 'लालच लाल' में अनुप्रास अलंकार हैं।
3. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।
4. 'लुकाइ' और 'जाइ' तुकांत पद हैं।

4. ***कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।***
भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीं सब बात॥

शब्दार्थ : कहत = कहना, **नटत** = इंकार करना, **रीझत** = रीझना (प्रसन्न होना), **खिझत** = खीजना, **मिलत** = मिलना, **खिलत** = खिल जाना, **लजियात** = शर्माना, **भौन** = भवन, **नैननु** = नेत्रों में।

व्याख्या : नायिका परिवार के सदस्यों के साथ घर में बैठी है। उसी समय नायक आकर दरवाजे से ही प्रेम भरा संकेत करता है। संकेत पाकर नायिका इनकार कर देती है। उसकी इस अदा पर नायक रीझ (प्रसन्न) जाता है। नायिका उस पर खीज जाती है। फिर नेत्रों के मिलन से नायिका का चेहरा खिल जाता है तथा नायिका लजा जाती है। इस प्रकार वे दोनों भरे हुए घर में नैनों के संकेत द्वारा बातचीत करते हैं।

काव्य-सौंदर्य :

भाव पक्ष :

1. नायक-नायिका के प्रेम का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।
2. प्रेम की अवस्थाओं का भी वर्णन किया गया है।

कला पक्ष :

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है तथा भाषा प्रभावोत्पादक है।
2. 'भरे भौन' में अनुप्रास अलंकार है।
3. इसमें शृंगार रस की प्रधानता है।
4. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है तथा प्रथम पंक्ति में ध्वन्यात्मकता है।

5. **बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन-तन माँह।**
देखि दुपहरी जेठ की छाँहौं चाहति छाँह॥

शब्दार्थ : बैठि = बैठना, **अति** = अत्यधिक, **सघन** = घनी, **बन** = वन, **पैठि** = छिपकर, **सदन-तन** = भवन में, घर में, **देखि** = देखकर, **दुपहरी** = दोपहर, **जेठ** = जेठ का महीना, **छाँहौं** = छाया।

व्याख्या : नायिका जेठ मास की गर्मी में अपने घर में ही छिपकर बैठी रहती है। ऐसे मौसम में उसका मन सघन वन में छिपकर बैठने को करता है क्योंकि वहाँ वृक्षों और लताओं के सघन होने के कारण गर्मी कम लगती है। जेठ मास की दोपहरी में तो वृक्ष की छाया भी छाया की इच्छा करने लगती है। अर्थात जेठ मास की गर्मी प्राणियों के साथ-साथ प्रकृति को भी दग्ध कर देती है।

काव्य-सौंदर्य :

भाव पक्ष :

1. इसमें जेठ मास की गर्मी का जीवंत वर्णन किया गया है।
2. गर्मी की भीषणता पर प्रकाश डाला गया है।

कला पक्ष :

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है।
2. भाषा सहज-सरल होने के साथ-साथ प्रभावोत्पादक है।
3. 'देखि दुपहरी' में अनुप्रास अलंकार है।
4. 'सदन-तन' में रूपक अलंकार है।
5. दोहा छंद का प्रयोग हुआ है तथा 'माँह छाँह' तुकांत पद हैं।

6. ***कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।***
कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात॥

शब्दार्थ : कागद = कागज, **लिखत** = लिखना, **सँदेसु** = संदेश, **लजात** = लज्जा लगती है, **तेरौ** = तुम्हारा, **हियौ** = हृदय (मन)।

व्याख्या : नायिका नायक को अपनी विरहावस्था का वर्णन करती हुई कहती है कि प्रेम-संदेश मुझसे कागज पर लिखा नही जाता और संदेश कहने में या फिर किसी दूती के द्वारा भेजने में भी लज्जा की अनुभूति होती है अर्थात नारी सुलभ लज्जा गुण के कारण मैं अपना संदेश लिखने में या फिर दूती के माध्यम से भेजने में असमर्थ हूँ। प्रेम तो वैसे भी हृदय का विषय है। इसका वर्णन मुख द्वारा नहीं किया जा सकता। अत: तुम्हारा हृदय मेरे हृदय की सब बातों को पढ़ लेगा अर्थात प्रेम की तीव्रता होने पर प्रेमी एकचित्त हो जाते हैं और वे एक-दूसरे के मन की बात स्वयं ही जान जाते हैं।

काव्य-सौंदर्य :

भाव पक्ष :

1. इसमें विरहावस्था की आकुलता का जीवंत वर्णन हुआ है।
2. विरहिणी नायिका की मनोव्यथा का सुंदर चित्रण किया गया है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

कला पक्ष :

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है। भाषा प्रभावोत्पादक है।
2. द्वितीय पंक्ति में अतिशयोक्ति अलंकार है।
3. इसमें वियोग श्रृंगार रस का सुंदर एवं स्वाभाविक चित्रण हुआ है।
4. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।

7. ***प्रगट भए द्विजराज-कुल, सुबस बसे ब्रज आइ।***
मेरे हरौ कलेस सब, केसव केसवराइ॥

शब्दार्थ : प्रगट भए = प्रकट होना, **द्विजराज** = ब्राह्मण, चंद्रमा, **कुल** = वंश, **सुबस** = अपनी इच्छा से, **बसे** = बसना, **आइ** = आकर, **हरौ** = दूर करो, **कलेस** = पीड़ा (दुःख), **केसव** = श्रीकृष्ण, **केसवराइ** = केशवराय, बिहारी के पिता का नाम।

व्याख्या : बिहारी लाल अपना परिचय देते हुए कहते हैं कि वे ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए और अपनी इच्छा से ब्रज में आकर बस गए। हे कृष्ण! आप तो केशव हैं और पिता भी केशवराय थे। अतः आप मेरे सभी क्लेश (पीड़ाओं) को हर लीजिए अर्थात दूर कीजिए।

काव्य सौंदर्य :

भाव पक्ष :

1. बिहारी जी स्वयं अपना परिचय दे रहे हैं।
2. कवि श्रीकृष्ण जी से अपनी पीड़ा हरने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

कला पक्ष :

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है तथा वह भावाभिव्यक्ति में सफल है।
2. 'बसे ब्रज' में अनुप्रास अलंकार है।
3. 'केसव केसवराइ' में यमक अलंकार है।
4. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।
5. आइ केसवराइ तुकांत पद हैं।

8. ***जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु।***
मन-काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु॥

शब्दार्थ : जपमाला = भगवान का नाम जपने की माला, **छापैं** = छापना, अंकित करना, **तिलक** = टीका (मस्तक पर लगाने वाला तिलक), **सरै न** = सिद्ध न होना, **एकौ** = एक भी, **कामु** = काम, मन, **नाचै** = नाचना, **काँचै** = कच्चा, **बृथा** = बेकार, **साँचै** = सच्चा, **राँचै** = प्रसन्न होना (रीझना), **रामु** = भगवान राम, ईश्वर।

व्याख्या : कवि मनुष्य को शिक्षा देते हुए कहते हैं कि ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले विभिन्न क्रियाकलाप यथा माला जपना, ईश्वर का नाम शरीर पर अंकित करना और मस्तक पर तिलक धारण करना, सब व्यर्थ हैं। इन बाह्य आडंबरों को करने से कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होगा। वास्तव में, जब तक तुम्हारा मन सांसारिक कर्मों के वशीभूत होकर इधर- उधर भटकता रहेगा, तब तक तुम्हारे हृदय में प्रभु का वास नहीं होगा और तब तक सारे बाहरी आडंबर व्यर्थ हैं। सच्चे मन से ईश्वर भक्ति करने पर ही भगवान राम रीझते (प्रसन्न) हैं।

काव्य-सौंदर्य :

भाव पक्ष :

1. कवि बाह्य आडंबरों का खंडन कर रहा है।
2. सच्ची भक्ति से ही ईश्वर-प्राप्ति संभव है। यह तथ्य उजागर किया गया है।

कला पक्ष :

1. ब्रज भाषा का सहज एवं सरल प्रयोग किया गया है।
2. 'राँचै रामु' में अनुप्रास अलंकार है।
3. दोहा छंद का प्रयोग हुआ है ।
4. कामु, रामु तुकांत पद हैं।

समेटिव असेसमेंट के लिए

एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. छाया भी कब छाया ढूँढ़ने लगती है?

[CBSE 2011 (Term-II)]

उत्तर : जब जेठ मास में भीषण गर्मी पड़ने के कारण सब दग्ध हो जाते हैं, उस समय लगता है कि छाया भी छाया ढूँढ़ने लगती है।

2. बिहारी की नायिका यह क्यों कहती है 'कहिहै सबु तेरी हियौ, मेरे हिय की बात' स्पष्ट कीजिए।

[CBSE 2011 (Term-II)]

उत्तर : बिहारी की नायिका ऐसा इसलिए कहती है क्योंकि प्रेमी और प्रेमिका का मानसिक मिलन इतना प्रगाढ़ होता है कि वे एक-दूसरे के हृदय की बात हृदय से ही जान लेते हैं। उन्हें शब्दों की आवश्यकता नहीं होती।

3. सच्चे मन में राम बसते हैं, दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : सच्चे मन में राम अर्थात हरि का वास होता है। कच्चा मन तो विषय-वासनाओं में ही उलझा रहता है। जिनका मन साफ़ नहीं होता, वे बाह्य आकर्षणों में उलझे रहते हैं। माला जपना, तिलक धारण करना तथा शरीर पर नाम अंकित करना-सब कुछ व्यर्थ है। ये सब तो बाहरी दिखावा है। इनसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। ईश्वर-प्राप्ति तो सच्चे मन से प्रार्थना करने पर ही होती है।

4. गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा देती हैं?

उत्तर : श्रीकृष्ण को बाँसुरी अत्यधिक प्रिय है। वे दिन-रात बाँसुरी को अपने साथ रखते हैं और वह उनके अधरों पर रहती है। जिस

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

कारण गोपियों को उनसे बातचीत का अवसर नहीं मिल पाता। वे श्रीकृष्ण की बाँसुरी इसीलिए छिपा देती हैं ताकि श्रीकृष्ण उनसे बातचीत कर सकें।

5. कविवर बिहारी ने सभी की उपस्थिति में भी कैसे बात की जा सकती है, इसका किस प्रकार वर्णन किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : बिहारी जी ने कहा है कि सांकेतिक भाषा के माध्यम से सबकी उपस्थिति में भी बात की जा सकती है। कवि के अनुसार नायिका अपने नेत्र संकेतों एवं हाव-भाव के माध्यम से नायक से वार्तालाप कर सकती है। जब नायक संकेत से नायिका को कुछ कहता है, तब नायिका उसकी बात का उत्तर सांकेतिक भाषा में देती है। दोनों को ही परिवारजनों की उपस्थिति से कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वैचारिक आदान-प्रदान सांकेतिक भाषा के माध्यम से हो जाता है।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए–

1. मनौ नीलमनि-सैल पर आतपु पर्‌यौ प्रभात।

उत्तर : इस पंक्ति में श्रीकृष्ण की वेशभूषा का प्रभाव दर्शाया गया है। श्रीकृष्ण के पीत वस्त्र ऐसे प्रतीत होते हैं मानो नीलमणि पर्वत पर सूर्य की किरणें पड़ रही हों।

भाव पक्ष :

1. श्रीकृष्ण की वेशभूषा का वर्णन किया गया है।
2. श्रीकृष्ण के पीत वस्त्रों की तुलना नीलमणि पर्वत पर पड़ने वाली सूर्य की किरणों से की गई है।

कला पक्ष :

1. ब्रज भाषा का सुंदर प्रयोग किया गया है और भाषा सहज एवं सरल है।
2. 'पर्‌यौ प्रभात' में अनुप्रास अलंकार है।
3. 'मनौ नीलमनि' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

2. जगतु तपोवन सौ कियौ दीरघ-दाघ-निदान।

उत्तर : गर्मी की भीषणता के कारण सारा संसार तपोवन की भाँति जल रहा है अर्थात भयंकर गर्मी पड़ रही है, जो असहनीय है।

भाव पक्ष :

1. गर्मी की भीषणता का चित्रण किया गया है।

कला पक्ष :

1. 'दीरघ-दाघ' में अनुप्रास अलंकार है।
2. जगत की समानता तपोवन से करने के कारण यहाँ उपमा अलंकार है।
3. ब्रजभाषा का सरस एवं सरल प्रयोग किया गया है।

3. जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु। मन-काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु॥

उत्तर : इस दोहे में बाह्य आडंबरों को मिथ्या बताया गया है। माला जपना, नाम अंकित करना, तिलक लगाना आदि सब क्रियाओं को व्यर्थ बताया गया है।

भाव पक्ष :

1. कवि ने बाह्य आडंबरों का खंडन किया है।
2. ईश्वर-प्राप्ति के लिए मन को पवित्र करने की बात कही गई है।

कला पक्ष :

1. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है तथा यह भावाभिव्यक्ति करने में सक्षम है।
2. 'राँचै रामु' में अनुप्रास अलंकार है।
3. दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।
4. कामु, रामु तुकांत पद हैं।

अन्य परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर (CCE पद्धति पर आधारित)

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

I. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए—

सोहत ओढ़ैं पीतु पटु स्याम, सलौनैं गात।
मनौ नीलमनि-सैल पर आतपु पर्‌यौ प्रभात॥

1. श्रीकृष्ण का शरीर कैसा है?

(क) श्रीकृष्ण का शरीर गोरा और सुंदर है
(ख) श्रीकृष्ण का शरीर पीला और सुंदर है
(ग) श्रीकृष्ण का शरीर साँवला और सुंदर है
(घ) श्रीकृष्ण का शरीर काला और कुरूप है

2. श्रीकृष्ण ने कैसे वस्त्र पहने हुए हैं?

(क) श्रीकृष्ण पीले वस्त्र पहने हुए हैं
(ख) श्रीकृष्ण सफेद वस्त्र पहने हुए हैं
(ग) श्रीकृष्ण नीले वस्त्र पहने हुए हैं
(घ) श्रीकृष्ण काले वस्त्र पहने हुए हैं

3. पीले वस्त्र धारण करने के बाद श्रीकृष्ण के सौंदर्य पर कवि ने क्या कल्पना की है?

(क) मानो सरसों के पीले खेतों पर सूर्य की किरणें पड़ रही हों
(ख) मानो नीले रंग के पर्वत पर सूर्य की प्रात:कालीन पीली धूप पड़ रही हो
(ग) मानों नीले रंग के पर्वत पर सूर्य की सायंकालीन धूप पड़ रही हो
(घ) इनमें से कोई नहीं

4. प्रस्तुत दोहे में कवि क्या कहना चाहता है?

(क) श्रीकृष्ण के साँवले तन पर पीले वस्त्र बहुत दिव्य आभा प्रदान कर रहे हैं
(ख) श्रीकृष्ण के साँवले तन पर पीले वस्त्र अच्छे नहीं लगते

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

(ग) श्रीकृष्ण नीले पर्वत के समान चमक रहे हैं
(घ) इनमें से कोई नहीं

5. ''मनौ नील मनि-सैल पर आतप पर्‌यौ प्रभात।'' में अलंकार है-
(क) अनुप्रास अलंकार (ख) यमक अलंकार
(ग) श्लेष अलंकार (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

उत्तर— 1. (ग) 2. (क) 3. (ख) 4. (क) 5. (घ)

II. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए— [CBSE 2011 (Term-II)]

कहलाने एकत बसत अहि मयूर, मृग बाघ।
जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ॥

1. उपर्युक्त दोहे के कवि कौन हैं?
(क) कबीर (ख) रहीम
(ग) बिहारी (घ) मलूकदास

2. 'दीरघ-दाघ' का अर्थ है-
(क) ग्रीष्म ऋतु (ख) प्रचंड गरमी
(ग) दीर्घ गरमी (घ) लंबी धूम

3. किनमें परस्पर शत्रुता है?
(क) साँप और बाघ (ख) साँप और अहि
(ग) साँप और मृग (घ) साँप और मयूर

4. दोहा किस भाषा में रचित है?
(क) ब्रज भाषा (ख) खड़ी बोली
(ग) अवधी (घ) बुंदेली

5. जंगल में हिंसक जानवर और अहिंसक जानवरों के एक साथ रहने का कारण है-
(क) वैरभाव का त्याग (ख) तपोबल का प्रभाव
(ग) भीषण गर्मी से जीवन रक्षा की चिंता
(घ) परस्पर समझौता होने का दिखावा

उत्तर— 1. (ग) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (ग)

III. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए— [CBSE 2011 (Term-II)]

बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौह करैं भौंहन हँसे, दैन कहैं नटि जाये॥
जपमाला छापैं तिलक सरैं न एकौ कामु।
मन काचैं नाचै वृथा साँचैं राचैं राम॥

1. राधा और सखियों ने मुरली क्यों छुपाई?
(क) शैतानी करने के लिए (ख) बतरस में रुचि के लिए
(ग) प्रेम जताने के लिए (घ) बाँसुरी के लिए

2. 'भौंहन हसैं' का अर्थ है?
(क) भवन में हँसना (ख) बहन को देख हँसना
(ग) एक दूसरे की ओर देख आँखों में हँसना
(घ) भवन पर हँसना

3. कवि किन आडंबरों की बात कर रहा है?
(क) पर्वत पर जाकर तप करने की
(ख) पीले वस्त्र पहनने की
(ग) कीर्तन करने की
(घ) माला जपना तथा रामनाम के छाप वाले वस्त्र पहनने की

4. ईश्वर की प्राप्ति कब होती है?
(क) पर्वत पर तप करने से (ख) सच्ची लगन से
(ग) मंदिर में बैठकर (घ) खाना छोड़ने से

5. काव्यांश के कवि का नाम है?
(क) बिहारी जी (ख) निराला जी
(ग) दिनकर जी (घ) रहीम जी

उत्तर— 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (क)

IV. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए—

कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात॥

1. संदेश कागज़ पर लिखने में क्या बाधा है?
(क) नायिका के पास कागज०नहीं है
(ख) नायिका को लिखना नहीं आता
(ग) कागज पर प्रेम संदेश लिखने से सब लोग जान जाएँगे
(घ) नायिका के पास कलम नहीं है

2. नायिका को संदेश कहते हुए लज्जा क्यों आती है?
(क) किसी अन्य को अपना प्रेम संदेश कहने में नायिका को लज्जा आती है
(ख) क्योंकि प्रेम करना लज्जा का कार्य है
(ग) नायिका को अपना प्रेम संदेश भेजने में लज्जा नहीं आती
(घ) नायिका के लिए प्रेम करना एक लज्जा की बात है

3. नायिका के सामने क्या दुविधा है?
(क) नायिका अपने प्रेम संदेश को कागज पर नहीं लिख पा रही है
(ख) नायिका किसी अन्य को प्रेम संदेश कहने में संकोच करती है
(ग) वह समझ नहीं पाती कि अपना प्रेम कैसे प्रकट करें
(घ) उपरोक्त सभी

4. किसका हियौ किसके हिय की बात कह सकता है?
(क) संदेशवाहक का हृदय नायिका के हृदय की बात कह सकता है
(ख) नायिका का हृदय नायक के हृदय की बात कह सकता है
(ग) नायक का हृदय नायिका के हृदय की बात कह सकता है
(घ) इनमें से कोई नहीं

5. प्रस्तुत दोहा किस भाषा में लिखा गया है?
(क) ब्रज भाषा में (ख) अवधी भाषा में
(ग) बघेली भाषा में (घ) खड़ी बोली में

उत्तर— 1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क)

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

V. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए—

कहत, नटत, रीझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीं सब बात॥

1. इस दोहे को किसने लिखा है?
(क) रसखान (ख) मीरा (ग) केशव (घ) बिहारी

2. इस दोहे में प्रेम भरा संकेत कौन देता है?
(क) नायक (ख) नायिका (ग) दोनों (घ) कोई नहीं

3. 'भरे भौन' में कौन-सा अलंकार है?
(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) अनुप्रास (घ) तीनों में से कोई नहीं

4. नायक नायिका के किस ढंग पर रीझ जाता है-
(क) हँसने पर (ख) मुस्कराने पर
(ग) मना करने पर (घ) तीनों पर

5. 'लजियात' का अर्थ है-
(क) शरमाना (ख) रोना (ग) क्रोध करना (घ) झिझका

उत्तर— 1. (घ) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (क)

VI. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए—

बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन-तन माँह।
देखि दुपहरी जेठ की, छाहौ चाहति छाँह।

1. प्रस्तुत दोहे में किस महीने का वर्णन है?
(क) जेठ मास (ख) चैत मास
(ग) फागुन मास (घ) सावन मास

2. छाया कहाँ छिप कर बैठ गई?
(क) वन में (ख) भवन रूपी शरीर में
(ग) पानी में (घ) तीनों में से कोई नहीं

3. 'सदन-तन' में कौन-सा अलंकार है।
(क) उपमा (ख) अनुप्रास (ग) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा

4. दोहे में 'जेठ की दुपहरी' से क्या आशय है?
(क) सबसे अधिक सर्दी (ख) सबसे अधिक घूमने वाला मौसम
(ग) सबसे खुशनुमा मौसम (घ) सबसे ज़्यादा गर्मी का मौसम

5. 'पैठि' का क्या अर्थ है?
(क) भागकर (ख) छिपकर (ग) दौड़कर (घ) कोई नहीं

उत्तर— 1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ख)

VII. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए— [CBSE 2011 (Term-I)]

जपमाला छापै, तिलक, सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु॥

1. भगवान किस प्रकार के भक्त से प्रसन्न होते हैं?
(क) जो माला जपता हो (ख) जो तिलक लगाए
(ग) जो मन से सच्चा हो (घ) जो ईश्वर का पूजन करे

2. उपर्युक्त दोहे के कवि का नाम है?
(क) सूरदास (ख) बिहारी
(ग) कबीरदास (घ) तुलसीदास

3. उपर्युक्त दोहे में कवि ने किस प्रकार के आडंबरों की भर्त्सना नहीं की?
(क) माला जपने की (ख) सच्चे मन से ईश्वर स्मरण की
(ग) तिलक लगाने की (घ) भजन गाकर नाचने-गाने की

4. 'मन काँचे' का अर्थ है-
(क) काँच जैसा मन (ख) ज्ञानी मन
(ग) कच्चा मन (घ) अस्थिर मन

5. दोहा किस भाषा में लिखा गया है?
(क) अवधी (ख) मैथिली (ग) ब्रज (घ) खड़ी बोली

उत्तर— 1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग)

VIII. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए—

प्रगट गए द्विजराज-कुल, सुबस बसे ब्रज आइ।
मेरे हरौ कलेस सब, केसव-केसवराइ॥

1. 'द्विजराज-कुल' का क्या अर्थ है?
(क) ब्राह्मण कुल (ख) क्षत्रिय कुल
(ग) वैश्य कुल (घ) कोई नहीं

2. कवि इन दोहों में किसका परिचय दे रहे हैं?
(क) कृष्ण का (ख) अपना
(ग) राधा का (घ) तीनों का

3. 'मेरी हरौ कलेस' में किसकी पीड़ा हरने को कह रहे हैं?
(क) मनुष्य की (ख) पशुओं की
(ग) संसार की (घ) अपनी

4. कवि ने केसवराइ किसको कहा है?
(क) भगवान को (ख) अपने आप को
(ग) अपने पिता को (घ) तीनों को

5. कवि अपने कष्ट किसकी कृपा से हरना चाहते हैं?
(क) माता की कृपा से (ख) कृष्ण की कृपा से
(ग) पिता की कृपा से (घ) कृष्ण और पिता की कृपा से

उत्तर— 1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (घ)

ख. काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. बिहारी के दोहों का वर्ण्य विषय क्या है?

उत्तर : बिहारी मुख्यत: शृंगारपरक दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं। किंतु पाठ्य पुस्तक में संकलित दोहे विविध प्रकार के हैं। जैसे पहले दोहे में कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन है। दूसरे और पाँचवे दोहे में ग्रीष्म ऋतु की भयंकरता का वर्णन है। तीसरे, चौथे और छठे दोहे शृंगारपरक हैं।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

2. कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन पाठ में दिए गए दोहों के आधार पर कीजिए।

उत्तर : बिहारी के दोहों में कृष्ण का रूप साँवला बताया गया है। किंतु उनके साँवले तन पर पीले वस्त्र खूब सुंदर लगते हैं। वे गोपियों के चहेते हैं। बिहारी के कृष्ण छैल-छबीले, नटखट और सुंदर हैं।

3. बिहारी के अनुसार ग्रीष्म ऋतु का वर्णन कीजिए। **[CBSE 2011 (Term-II)]**

उत्तर : ग्रीष्म ऋतु की प्रचंड गर्मी है। सारा संसार तपोवन के समान हो गया है। गर्मी के कारण जंगल के सभी जानवर इतने बेहाल हैं कि वे आपसी शत्रुता भूलकर एक ही जगह रहते दिखाई दे रहे हैं। हिरण, शेर, साँप-मोर एक साथ झुलस रहे हैं।

4. गोपियों द्वारा कृष्ण की मुरली छिपाने में उनकी कौन-सी भावना थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : गोपियों द्वारा कृष्ण की मुरली छिपाना कृष्ण के प्रति उनकी अनन्य प्रेम-भावना को दर्शाता है। वे कृष्ण से बातें करने के लिए उन्हें अपने पास बुलाना चाहती थीं। इसी कारण कृष्ण की सबसे प्रिय चीज़ मुरली को छिपा देती हैं, जिससे कृष्ण मुरली लेने उनके पास आएँगे तो वे उनसे बातें करेंगी।

5. 'बिहारी ने किन बाहरी आडंबरों का खंडन किया है? और क्यों? दोहों के आधार पर लिखिए। **[CBSE 2011 (Term-II)]**

उत्तर : कवि के अनुसार ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले विभिन्न क्रियाकलाप; यथा माला जपना, ईश्वर का नाम शरीर पर अंकित करना और मस्तक पर तिलक धारण करना, सब व्यर्थ हैं। इन बाह्य आडंबरों को करने से कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होगा। जब तक हृदय में प्रभु का वास नहीं हो जाता और मन सच्चा नहीं हो जाता तब तक इन बाह्य आडंबरों से कुछ भी लाभ नहीं होगा।

6. श्रीकृष्ण के शरीर की तुलना किस पर्वत से की गई है और क्यों? **[CBSE 2011 (Term-II)]**

उत्तर : श्रीकृष्ण के शरीर की तुलना नीलमणि पर्वत से की गई है क्योंकि श्रीकृष्ण के शरीर का रंग साँवला है एवं नीलमणि पर्वत का रंग भी उनके शरीर से मिलता-जुलता है। कवि कहता है कि कृष्ण के साँवले शरीर पर पीला-वस्त्र ऐसे शोभायमान हो रहा है। मानो नीलमणि पर्वत पर प्रात:कालीन सूर्य की किरणें बिखर गई हो।

7. 'बिहारी की भक्ति में प्रेम की प्रधानता है' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : बिहारी ने अपने दोहों में कृष्ण के प्रति जो भक्ति-भावना दर्शायी है, वह प्रेम पर आधारित है। कवि का कृष्ण के प्रति यही प्रेम कभी उनके रूप-सौंदर्य के वर्णन में दिखाई पड़ता है। कभी प्रेम दीवानी गोपियों के कृष्ण से बात करने के प्रसंग में प्रकट होता है। कहीं यह प्रेम कृष्ण-राधा के प्रेम में भी दिखाई देता है।

8. बिहारी कवि ने 'जगत तपोवन सो कियो' ऐसा क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए। **[CBSE 2011 (Term-II)]**

उत्तर : इस दोहे के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि विपत्ति या परेशानी की घड़ी में लोगों को आपसी बैर-भाव भुलाकर मिल-जुलकर रहना चाहिए। तभी वे किसी भी संकट का सामना कर सकेंगे। उसी प्रकार जैसे जंगल के पशु गर्मी की मार झेलने के लिए अपनी शत्रुता भूलकर छाया वाले स्थान पर एक साथ बैठ जाते हैं।

9. दोहे में 'तपोवन' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : तपोवन में तप किया जाता है। वहाँ परस्पर सद्भाव और मित्रता का वातावरण रहता है। वहाँ कोई शत्रुता नहीं होती। कवि ने तपोवन का उदाहरण इसलिए दिया हो कि जंगल में भी सभी प्राणी अपने आपसी वैर-भाव भूलकर एक साथ पेड़ों की छाया में बैठे हैं।

10. पीले वस्त्र में सुशोभित कृष्ण के रूप में सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर : कृष्ण के साँवले शरीर पर पीला वस्त्र ऐसे शोभायमान हो रहा है। मानो नीलमणि पर्वत पर प्रात:कालीन सूर्य की किरणें बिखर गई हों। यहाँ पर कवि ने कृष्ण के साँवले शरीर की तुलना नीलमणि पर्वत तथा पीले वस्त्रों की तुलना प्रात:कालीन धूप से की है।

फ़ॉरमेटिव असेसमेंट के लिए

क्रियाकलाप

- बिहारी के दोहों के आधार पर ग्रीष्म ऋतु की प्रचंडता का वर्णन करते हुए **अनुच्छेद-लेखन** करवाया जा सकता है।
- बिहारी के दोहे में 'मुरली' का उल्लेख हुआ है। भारतीय विभिन्न वाद्ययंत्रों के बारे में जानकारी जुटाने के लिए विद्यार्थियों से कह सकते हैं। 'भारतीय वाद्ययंत्र' पर एक प्रोजेक्ट तैयार करने के लिए कहें। इसके लिए विद्यार्थी पुस्तकालय, इंटरनेट और संगीत अध्यापक से सहायता प्राप्त कर सकते हैं। विभिन्न स्रोतों से वाद्ययंत्रों के चित्र एकत्र कर स्क्रैपबुक में चिपकाएँ। फिर उनके नाम और उनकी विशेषताओं का संक्षिप्त लेखा-जोखा प्रस्तुत करें।
- बिहारी के दोहों के आधार पर ग्रीष्म ऋतु का एक सुंदर चित्र बनाने के लिए कह सकते हैं, जिसमें जंगल के सभी जानवर आपसी शत्रुता भुलाकर एक ही जगह आराम कर रहे हों।

कक्षा-कार्य

अध्यापक-अध्यापिका कक्षा में छात्र-छात्राओं से कुछ मौखिक प्रश्न पूछ सकते हैं। जैसे-

- 'बतरस' से क्या तात्पर्य है?
- 'तपोवन' से क्या तात्पर्य है?
- दोहों की क्या विशेषताएँ होती हैं?

गृह-कार्य

- बिहारी के इन दोहों को कंठस्थ करें।
- कृष्ण भक्ति में से संबंधित सूरदास अथवा रसखान के पदों को एकत्रित करें।
- बिहारी का जीवन परिचय पढ़िए।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN